



अपने हृदय की सुनो

दिल्ली से प्रकाशित फर्स्ट सिटी ने स्वामी प्रेम जोशुआ पर एक लेख अपने फरवरी अंक में प्रकाशित किया। जोशुआ भारतीय संगीत के संबंध में कहते हैं—भारतीय शास्त्रीय संगीत उन लोगों ने रचा है जो मूलतः ध्यानी थे। जो परम मौन की ओर देखते हैं और जो अपनी भावनाओं को संगीत के माध्यम से जाहिर करते हैं। हारमनी नाम से छपे इस लेख में आगे जोशुआ कहते हैं—जब भी मैं अपनी आंखें बंद करता हूँ और ओशो के संबंध में सोचता हूँ, वे हमेशा नृत्य करते हुए ही दिखते हैं। वे उत्सव से प्रेम करते हैं। इसी अंक में स्वामी अनुबुद्ध और मा अनीशा का साक्षात्कार भी प्रकाशित हुआ। स्वामी अनुबुद्ध कहते हैं—स्पर्श इसी क्षण घटता है, जब मैं आपसे बात कर रहा हूँ तो मेरी ध्वनि-तरंगें श्रोताओं को छूती हैं और जब मैं देखता हूँ तो मेरी आंखों की तरंग उन्हें छूती है। स्पर्श जीवन है, उसमें स्वीकार भाव है।

प्रवचन में यही बताया। 3 फरवरी के दैनिक नवज्योति (जयपुर) ने 'जहां सिर झुका वहीं गुरु' शीर्षक से इसे प्रकाशित किया।

'प्रेम जीवन को बढ़ाता है, इसके बिना जीना नीरस है। जीवन का दान ही प्रेम है।' ये पंक्तियां 5 फरवरी के दिव्य हिमाचल (चंडीगढ़) में प्रकाशित प्रवचन की हैं, जिसका शीर्षक था—प्रेम की कला सीखो।

'बहुत शेष है, बहुत शेष है, बहुत शेष है,

हम मत भूलें, हम मत अपना गुणगान करें

जिस घर को छूने सागर की लहरें दौड़ रही हैं

आओ, उस घर के मालिक से कुछ पहचान करें।

ऐसा सोचकर मत बैठे रहना कि बहुत शेष है, बहुत शेष है...ऐसा सोच-सोचकर आलस्य को मत सजाते-संवारेते रहना—8 फरवरी के लोकमत समाचार (नागपुर) में प्रकाशित इस लेख का शीर्षक था 'दोनों ओर से जले मशालें।'

अपने एक प्रवचन में ओशो ने कहा है—'मैं प्रेम का पक्षपाती हूँ, प्रेम का उपदेष्टा हूँ। कहता हूँ, खूब प्रेम करो। क्योंकि प्रेम का ही निचोड़ एक दिन प्रार्थना बनेगा।' प्रेम ऐसा भरोसा है जिसे तुम देने जा रहे हो, वह ले लेगा, इनकार नहीं करेगा।' 9 फरवरी की राजस्थान पत्रिका (जयपुर) ने प्रेम पर ओशो के विचारों को प्रस्तुत किया।

'कृष्ण ने जीवन को कार्य की भांति, कर्तव्य की भांति नहीं जिया। उन्होंने इसे एक उत्सव, एक त्यौहार की भांति जिया। जीवन एक उत्सवपूर्ण भोज है।' 9 फरवरी के आफ्टरनून डिस्पैच एंड



Osho

Stop working, start celebrating

Is your life a schedule of duties and works to be performed, or is it a celebration? If life is work, a duty, then it is bound to turn into a burden, a drag, and we work through it with a heavy heart. Krishna does not take life as work, as duty; he takes it as a celebration, a festivity. Life is really a great feast, a blissful festivity. It is not homework, not a task that has to be performed.

It is not that someone will cease to work if he takes life as a celebration. He will certainly work, but his work will be a part of the festivity, it will have the flavour of celebration. Then work will happen with singing and dancing. It is true there will not be too much work; it will be less in quantity, but in quality it will be superb.

You must have noticed how people who are addicted to work, who turn everything into work, have filled life with tension. All anxieties of life are the handiwork of the workaholics. Their slogan is, do or die. They say, "Do something as long as you are alive, or die if you cannot do anything." They have no other vision of life except work. And they don't even have a right perspective of work. Work for what? Why does man work?

Man works so he can live. And what does living mean? It means celebrating life. We work so that we can have a moment of dance in our life. But the irony is that the way we live, there is no leisure left to sing and dance and celebrate life. We make work the be-all and end-all of life. And then life is confined between two places, our home and the office.

Home to office and back home is all we know of life. In fact, home ceases to be home; we bring our office home with us in the evening. Then psychologically we are in a mess; we live an entangled life, a confused and listless life. Then we keep working for the rest of our lives in the hope that someday we will have time to relax and enjoy life. But that day will never come. Workaholics will never know that there is rest and joy and bliss in life.

Entertainment has taken the place of celebration in the present world. For entertainment is quite different from celebration. In celebration you are a participant; in entertainment you are only a spectator. In entertainment you watch others playing for you. Celebration is active; entertainment is passive. In celebration you dance; in entertainment you see someone dancing, you pay him for it. You work hard during the day, and when you are tired in the evening you go to a concert to watch others dancing. It is all you can do, but it is not even an apology for celebration.

We had to find a substitute for celebration -- entertainment is that substitute -- because we do need a few moments of relaxation, a brief spell of diversion. But entertainment is a very poor substitute. It is like the pleasure we derive from watching someone in love. This is precisely what you do when you watch a movie. You watch a man and woman loving each other and you enjoy it vicariously. It is a false substitute; it is utterly useless. It is not going to give you a taste of love. It is not going to satiate your thirst for love. In fact your disaffection and torment will deepen and land you in still greater misery.

Know love directly, enter into it, and only then you will be able to understand it.

Beneath the blue sky

OSHO

The heart is always right! There is a question of choosing between mind and heart, because the mind is a creation of society, it has been educated. The heart is uneducated. The mind functions in "either/or" way: either right or the opposite. Both cannot be right -- as for as mind's logic is concerned, if mind is "either/or", the heart is "both/and". The heart has no logic, but what it does have is a beautiful kind of sensitivity and perceptivity. It can see they both cannot only be together, in fact they are not both. It is one phenomenon seen from two different aspects.

The heart knows nothing of the past or future; only the present. If the whole of existence is one, and goes on taking care of itself, automatic maintenance, occurs from the smallest blade of grass to the biggest star, it will take care of you too. Why be possessive? This cannot train existence. You have to arrange separate security for yourself.

Non-possessiveness is trust.

In existence. There is no need to possess, because the whole is one. So drop your guilt! To be guilty is to live in hell. Not being guilty you will

Listen to your heart because it tells truth. It may lack logic but its sensitivity brings life radiance

have freshness of development in the

has petals in the lake. Freshness of stars at night.

Once guilt disappears, you will have a luminous, radiant life. You will have dance in your feet and your heart will sing (triumphant song). If the mind seems to comprehend reality, it will have to come out of the past and future. But emerging, it is no longer mind. Hence the great teachers feel that the door to reality is non-mind.

Existence is not a problem to be solved. It is a mystery to be lived. And you should be perfectly aware what the difference is.

With a problem fight arises. You have to solve it; something is wrong, you have to put it right. With mystery there is no question like that. The moon arises. It is not a problem. It is a mystery. You have to live with it. You have to dance, sing, be silent.

Be less of a judge and you will be surprised that when you become a witness, you stop judging others. That makes you human, compassionate, more understanding. Which on reflection is a great place



कूरियर (मुम्बई) ने इस प्रवचन को 'स्टॉप वर्किंग, स्टार्ट सेलिब्रेशन' शीर्षक से छापा। 'जीवन के सभी संबंधों के बीच मैं सन्यासी को संसार से जोड़ना चाहता हूँ। मैं ऐसे सन्यासी देखना चाहता हूँ जो दुकान पर भी बैठे हों, दफ्तर में काम भी कर रहे हों, जो जिंदगी को पूरी सघनता से जीयें।' ओशो के सन्यासी की इस परिभाषा को 14 फरवरी के आज (लखनऊ) ने प्रकाशित किया।

'अपने हृदय की सुनो, क्योंकि वह सत्य कहता है।' 'बिनीथ दि ब्लू स्कार्ड'—यह शीर्षक है 15 फरवरी को पायनियर (लखनऊ) में प्रकाशित इस प्रवचन का, जिसमें ओशो कह रहे हैं कि—मन जानता है कि भूत और भविष्य कुछ नहीं है, मात्र वर्तमान ही है। 20 फरवरी के वीर अर्जुन (नई दिल्ली) ने ओशो की पुस्तक 'करुणा और क्रांति' की समीक्षा प्रकाशित की। पुस्तक के एक प्रवचन में ओशो कहते हैं—करुणा होगी तो क्रांति होगी। अगर करुणा आ जाए तो क्रांति अनिवार्य है। 'ध्यान चेतना की विशुद्ध अवस्था है, जहां कोई विचार नहीं होते, कोई विषय नहीं होता।' जागरण सखी के मार्च अंक में यह लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने ध्यान की कुछ विधियों को पाठकों से सम्मुख रखा।

4 फरवरी के ग्वालियर से प्रकाशित नवभारत, नई दुनिया तथा स्वदेश समाचार पत्रों ने 8-9 फरवरी को हुए ओशो नृत्य ध्यान शिविर की पूर्व सूचना प्रकाशित करते हुए लिखा है—इस शिविर में चिकुंग, ताइची आदि प्रकार की ध्यान

से जुड़ी हुई नृत्य शैलियों से परिचय करवाया जाएगा। शिविर का संचालन स्वामी संबोध विराम द्वारा किया गया। 'एक ओशो सन्यासी ने कहा कि इस तरह का सूफी संगीत सुनने पर लगता है कि वह आपकी आत्मा में घुल रहा है और परमात्मा के निकट ले जा रहा है'—6 फरवरी के दि टाइम्स ऑफ इंडिया, चंडीगढ़ ने पंचकुला में हुए सन्यास उत्सव का ब्यौरा प्रकाशित किया और आगे लिखा—इस प्रकार का जीवंत सूफी संगीत गहरा मौन पाने में सहायक होता है।

मध्य फरवरी में नई दिल्ली के आगा खान हॉल में हुई पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान ओशो की नई पुस्तक 'जीवन क्या है' का विमोचन उद्योगपति और सांसद श्री नवीन जिंदल द्वारा किया गया। 14 फरवरी के राष्ट्रीय सहारा (नई दिल्ली) के अनुसार—'श्री जिंदल ने कहा कि ओशो ने लोगों के जीवन को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और यह अच्छी बात है कि उनके विचार आज किताब के रूप में पाठकों के सामने आ रहे हैं।' इसी समाचार को इंडियन एक्सप्रेस तथा अमर उजाला ने भी प्रकाशित किया।

फरवरी माह का एक अन्य विशेष आकर्षण रहा 22 फरवरी की संध्या, अवसर था नई दिल्ली के वसंत कॉन्टीनेंटल में 'तंत्रा : दि वे ऑफ लिविंग एंड लविंग' पुस्तक का विमोचन। यह पुस्तक इटली से आर्यी मा कृष्णराधा द्वारा लिखी गई है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी विनोद भारती उपस्थित थे। पुस्तक के संबंध में मा राधा कहती हैं—यह पुस्तक कोई

जीवनी नहीं है। यह पुस्तक उसका समावेश है जो मैंने तंत्र के साथ सीखा और उसके साथ अनुभव किया, जो मैंने अपने सद्गुरु से पाया।' स्वामी विनोद भारती ने कहा—जब मैं ओशो का सन्यासी बना तो वह मेरे जैसे अभिनेता के जिंदगी का बड़ा जोखिम था। मगर मुझे इसके लिए कभी पछतावा नहीं हुआ। मैं सोचता हूँ एक दिन स्वयं मैं भी ओशो पर एक किताब लिखूंगा।' इस समाचार को हिन्दुस्तान टाइम्स, पायनियर तथा टूडे जैसे समाचार पत्रों ने विशेष स्थान देकर प्रकाशित किया तथा एन.डी.टी.वी. और जूम चैनल पर दिखाया गया।

फरवरी की 'अहा जिंदगी' (बहुत तेज़ी से पूरे भारत में व्यापक रूप में उपलब्ध मासिक पत्रिका) में ओशो के जीवन-दर्शन पर आधारित प्रेम पर स्वामी चैतन्य कीर्ति का लेख प्रकाशित किया तथा निश्चित ही यह पत्रिका बहुत सुरुचिपूर्ण सामग्री से आपूरित है तथा स्वस्थ पत्रकारिता की परिचायक है।

— स्वामी प्रेम अभिनंदन

ओशो नृत्य ध्यान शिविर

खजुराहो में आठ से

(नईदुनिया समाचारदाता)

स्वाभाविक ४ फरवरी। मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थल खजुराहो और कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में ओशो नृत्य शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।

सूची अपूर्ण में बताया कि पहला शिविर खजुराहो में ८ व ९ फरवरी को आयोजित होगा, जिसमें शिविर के सन्यासी श्री विराम वि. कांभ, ताईची आदि विभिन्न प्रकार की व्यायाम से जुड़ी हुई नृत्य शैलियों से परिचय कराएंगे। इसी प्रकार कान्हा में १० से १३ फरवरी तक आयोजित शिविर का संचालन ओशो कान्हा पत्रिका के संपादक स्वामी चिच्छेने माह अजेंदीना व प्रोग्राम के निदेशक श्री विराम वि. कांभ द्वारा किया जाएगा।

अपोजनकर्ताओं का कहना है कि मध्यप्रदेश ओशो तीर्थ बनता आ रहा है। जिसकी वजह से विचर में मध्य प्रदेश का पहचान बन रही है। आयोजकों के अनुसार शिविरों में ओशो पर फिल्म बनाने के दिनों पर फिल्मों का भी प्रदर्शन होगा।

विमलकीर्ति का मार्ग

विमलकीर्ति का मार्ग... (Text describing the path of Vimalkirti, mentioning his journey and teachings.)